भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (भा.इ.अ.प.) की
अनुसंधान परियोजनाओं पर संक्षिप्त विवरण

वर्नाक्यूलर सोर्सेस ऑफ इंडिया:

भारत का इतिहास लिखने के लिए स्थानीय भाषा के स्रोतों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारतीय दृष्टिकोण से भारत का इतिहास लिखने हेतु भा.इ.अ.प. ने इस परियोजना की शुरुआत की है। परियोजना के पहले चरण में परिषद् देश भर के विभिन्न संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर कर रहा है। यह परियोजना परिषद् के प्रोफेसर सतीश चंद्र मित्तल लाइब्रेरी-कम-डॉक्यूमेंटेशन सेंटर के संग्रह को समृद्ध करने में मदद करेगी। स्थानीय स्रोतों तक पहुँच हो जाने के बाद प्राथमिक स्रोत सामग्री/पांडुलिपियों के रूप में प्राथमिक जानकारी भारतीय स्रोतों के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं में भारतीय इतिहास लिखने के उद्देश्य को पूरा करेगी

भारत का समग्र इतिहास (कंप्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ़ भारत):

भा.इ.अ.प. ने भारत का समग्र इतिहास लिखने के उद्देश्य से इस शोध परियोजना को शुरू किया है। यह ध्यान देने की बात है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में खुदाई से प्रकाश में आई सभ्यता से यह स्पष्ट हुआ कि जब पश्चिमी देश जंगल युग में रह रहे थे तब भारत में एक विकसित सभ्यता थी। इस परियोजना के तहत भारतीय भाषा के स्रोतों के विशेष उपयोग पर विचार करने की योजना है। यह परियोजना 10 खंडों में प्रकाशित की जाएगी।

भारत का आर्थिक इतिहास:

इस शोध परियोजना के माध्यम से प्राचीन, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भारतीय राजवंशों के प्रशासन के अंतर्गत हुए आर्थिक विकास की जड़ों का पता लगाना है। पहले के इतिहासकारों ने दिशा में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। भारत के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास पर कुल मिलाकर छह खंडों (दो खंड प्रत्येक कालखंड) पर प्रकाशित करने का उद्देश्य है। इस परियोजना को करने से भारत के आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर होने के विचार की पुष्टि होगी।

भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इतिहास:

विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मानव समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्य में प्रकृति को देखने और समझने की इच्छा रही है ताकि वह अपने लाभ और कल्याण के लिए प्रकृति को नियंत्रित और हेरफेर कर सके। प्राचीन काल से, भारत में शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की एक गौरवशाली संस्कृति रही है और इसने खगोल विज्ञान, अंकगणित, ज्यामिति, धातु विज्ञान, चिकित्सा की आयुर्वेदिक प्रणाली और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भा.इ.अ.प. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की प्राचीन ज्ञान प्रणाली के योगदान को स्थापित करने के लिए इन सभी पहलुओं पर जोर देने के लिए यह महत्वपूर्ण परियोजना कर रहा है। इससे विश्व में भारत की विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में प्रभुदत्ता साबित होगा।

आयुर्वेद का इतिहास:

आयुर्वेद को दुनिया भर में स्वीकृत चिकित्सा की सबसे पुरानी पारंपरिक प्रणालियों में से एक माना जाता है। औषधि एवं चिकित्सा की इस पारंपरिक प्रणाली में प्राचीन ज्ञान अभी भी पूरी तरह से खोजा नहीं गया है। चिकित्सा की विभिन्न पारंपरिक प्रणालियों से समृद्ध ज्ञान के संयोजन से हर्बल औषधि खोज प्रक्रिया में नए रास्ते खुल सकते हैं। पौधों पर आधारित दवाओं की खोज में अनेकों बाधाओं को सैद्धांतिक और व्यवहारिक तौर पर दूर करने के प्रयास में सहायता मिलेगी। इस परियोजना का उद्देश्य सदियों पुराने इतिहास और आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को प्रकाश में लाना है। इससे नवोदित विद्वानों, शोधकर्ताओं और चिकित्सकों को चिकित्सा की पारंपरिक प्रणालियों की गहरी समझ प्राप्त करने में मदद मिलेगी और ऐसी औषधीय प्रणालियों की वैश्विक स्वीकृति और सामंजस्य की दिशा में आने वाली चुनौतियों को दूर किया जा सकेगा। यह परियोजना भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् की एक ऐसी पहल है जिसका उद्देश्य भारत की प्राचीन ज्ञान प्रणाली को वैश्विक पटल पर स्थापित करना है।